प्रातः क्लास 1/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बाप ब्रह्मा द्वारा राय दे रहे हैं, याद करो तो यह बनेंगे। सतोप्रधान बन अपने पैराडाइज़ राज्य में प्रवेश करेंगे। यह सिर्फ तुमको नहीं कहते हैं; परन्तु यह आवाज़ तो सारी भारत, बल्कि विलायत में भी यह आवाज़ जावेगा सभी के पास। बहुतों को सा॰ भी होगा। किसका सा॰ होगा, यह भी बुद्धि से काम लेना चाहिए। बाप ब्रह्मा द्वारा ही सा॰ कराकर कहते हैं– प्रिन्स बनना है तो जाओ ब्रह्मा वा ब्राह्मणों के पास। यूरोपवासी भी यह समझने चाहते हैं। भारत पैराडाइज़ था तो किसका राज्य था, यह पूरा कोई जानते ही नहीं। भारत ही हेविन, स्वर्ग था। अभी तुम सभी को समझा रहे हो, यह सहज राजयोग है, जिससे भारत स्वर्ग अथवा हेविन बनता है। विलायत वालों की फिर भी बुद्धि कुछ अच्छी है, वह झट समझेंगे। यह तो बिल्कुल ही तमोप्रधान बुद्धि हैं। तो अभी सर्विसएबुल बच्चों को क्या करना चाहिए, उन्हों को ही डायरैक्शन देनी पड़ती है। बच्चों को प्राचीन राजयोग सिखाना है। तुम्हारे पास म्युज़ियम, प्रदर्शनी आदि में बहुत आते हैं, ओपनिंग लिखते हैं कि यह बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं; परन्तु खुद समझते नहीं है। थोड़ा कुछ टच होता है तो आते हैं। फिर भी गरीब अपना अच्छा-अच्छा भाग्य लेंगे। समझने का पुरुषार्थ करेंगे। साहुकारों को तो पुरुषार्थ करना न है। देह-अभिमान बहुत है ना, तो ड्रामा अनुसार जैसे बाबा ने दण्ड दे दिया है। फिर भी उन द्वारा आवाज़ कराना पड़ता है। विलायत वाले तो यह नॉलेज चाहते हैं। सुनकर बहुत खुश हो जायें। गवर्नमेंट के ऑफ़िसर्स पिछाड़ी कितनी मेहनत करते हैं; परन्तु फुर्सत ही नहीं उन्हों को। भल घर बैठे सा॰ भी हो जाये तो भी बुद्धि में नहीं आवेगा। तो बच्चों को बाबा राय देते हैं ओपिनिंग अच्छे-2 इकट्ठे करके फिर उनका एक अच्छा किताब बनावें। राय दे सकते हैं देखो, कितने सभी को यह अच्छा लगता है। विलायत वाले या भारतवासी भी सहज राजयोग जानने चाहते हैं। स्वर्ग के देवी-देवताओं की राजाई, जो सहज राजयोग से भारत को प्राप्त होती है, तो क्यों न यह म्युज़ियम गवनर्मेंट हाउस में अंदर लगा दें, जहां संगठन आदि होते रहते हैं। यह ख्यालात बच्चों की चलनी चाहिए। अभी टाहम लगेगा। अभी इतने नर्म बुद्धि नहीं होंगे। गॉडरेज़ का ताला बुद्धि को लगा हुआ है। अभी आवाज़ निकले तो रिवोल्युशन हो जावे। हां, होने का है ज़रूर। बोलो, गवनर्मेंट हाउस में भी म्युज़ियम हो तो बहुत फ़ॉरेनर्स भी आकर देखें। विजय तो बच्चों की ज़रूर होनी है। तो ख्यालात चलनी चाहिए। देहीअभिमानी को ही ऐसी ख्यालात आवेगी कि क्या करना चाहिए, जो बिचारों को मालूम पड़े और बाप से वर्सा लेवें। हम लिखते भी हैं बिगर कोई कौड़ी खर्चा। तो अच्छे-2 जो आते हैं, राय देनी है। डिप्टी(डेप्युटी) प्राइम मिनिस्टर ओपनिंग करने आते हैं, फिर प्राइम मिनिस्टर, प्रेसिडेंट भी आवेंगे; क्योंकि उन्हों को भी जाकर बतावेंगे यह तो वण्डरफुल नॉलेज है। सुप्रीम शांति तो ऐसे स्थापन होनी है, जँचता है। समझानी है जँचने जैसी। आज न जँचेंगे तो कल जँचेंगे। बाबा कहते रहते हैं बड़े-2 आदमियों पास जाओ, आगे चल यह सभी समझेंगे। जैसे कोस-घर शादियों के लिए बनाते हैं। जितना बड़े-2 आदमी उतना ही बड़े-2 हॉल में शादी। यह है कत्लेआम होने का जलसा। तो उन्हों को भी धीरे-2 समझाना होता है। इन्हों की ट्रस्टी भी कोई कैसे, कोई कैसे होते हैं। बम्बई में ल॰ना॰ के मंदिर में कोस-घर बनाया था। फिर देखा शादी इतनी नहीं होती है, तो फिर होटल वाले को दे दिया। वह भी तो खराब काम है। ल॰ना॰ के मंदिर में फिर होटल! मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल ही तमोप्रधान है ना, जो ऐसे-2 काम करते हैं। दिन-प्रतिदिन तमोप्रधान होते जाते हैं। तुम समझाने की कोशिश करते हो कि यह कत्लेआम करने का धंधा आदि बन्द करो। अपनी उन्नति करो। मूत पिलाना बन्द करो। बाप आये हैं पवित्र देवता बनाने। आखरीन वह दिन भी आवेगा जो गवनर्मेंट हाउस में भी म्युज़ियम होगा। टेम्पररी तो हुआ है ना, तो समझाया जाता है क्यों (न) यह स्थायी बन जाये। जब बहुतों की ओपनिंग मिले। बोलो, खर्चा तो हम अपना करते हैं। गवनर्मेंट सच में तो कब पैसा न देगी। तुम बच्चे कहेंगे, हम अपने खर्चा से हरेक गवर्मेंट हाउस में यह म्युज़ियम लगा सकते हैं। एक बड़ी गवनर्मेंट हाउस में म्युज़ियम हो जाये तो फिर सभी प्रबन्ध हो जावेगा। फिर समझाने वाला भी ज़रूर चाहि(ए)

उनको कहेंगे टाइम मुकर्रर करो जो कोई आकर रास्ता बतावे। हम बिगर कौड़ी खर्चे हेविन जाने का रास्ता बतावेंगे। आगे यह होने का है; परन्तु बाप बच्चों को दूरंदेशी बनाते हैं। अच्छे-2 बच्चे जो अपन को महावीर समझते हैं, उनको ही माया नाक से पकड़ती है। आधा कच्चों को ज़रूर हरावेगी। जो देह-अभिमान में आते हैं उनको नाक से पकड़ती है। बड़ी ऊँच मंज़िल है। बड़ी खबरदारी रखनी है। बॉक्सिंग कम नहीं। बड़ी ते बड़ी बॉक्सिंग है। रावण को जीतने का युद्ध का मैदान है। थोड़ा भी देह-अभिमान आया, मैं ऐसे सर्विस करता हूँ, यह करता हूँ, यह मरा। मेहनत है बहुत। हम तो गॉडली सर्वेन्ट हैं। हमको पैगाम देना ही है। इसमें गुप्त मेहनत बहुत है। तुम योग और योगबल से ही अपन को सजाते हो। इसमें गुप्त रह विचार-सागर-मंथर करें, तब नशा चढ़ता रहे। यह भी सर्विस करेंगे। ऐसे प्यार से समझावेंगे। बेहद के बाप का वर्सा हर कल्प भारतवासियों को मिलता है। 5000 वर्ष पहले इन (ल॰ना॰) का राज्य था ना। अभी तो कहा जाता है वैश्यालय। सतयुग है शिवालय। वही शिवबाबा की स्थापना है। यह है रावण की स्थापना। रात-दिन का फर्क है; परन्तु बन्दर बुद्धि कुछ भी समझते नहीं हैं। गायन भी है बन्दरों के आगे रत्न रखो, वह पत्थर समझ फेंक देंगे। रामायण में भी बन्द(र) सेना का वर्णन है। यह बन्दर सेना है ना। दिखाते हैं राम ने बन्दर सेना ली। रावण ने बन्दर बनाया। राम फिर उस सेना को लायक बनाकर रावण पर जीत पहनाते हैं। यह बड़ी समझने की बातें हैं। बच्चे फ़ील करते हैं बरोबर हम क्या बन गये थे। अभी बाप आया हुआ है आप समान बनाने। मूल बात है देही अभिमानी पन की। देही-अभिमानी हो विचार करना होता है। आज हमको फलाने प्राइम मिनिस्टर को समझाना है। उनको दृष्टि दें जो सा॰ भी हो सकता है। तुम दृष्टि दे सकते हो। अगर देही-अभिमानी हो रहो तो तुम्हारी बैटरी भरती जाती है। देही-अभिमानी हो बैठो, तब बैटरी भर सके। गरीब झट अपनी बैटरी भरते हैं; क्योंकि वह बाप को बहुत याद करते हैं। जिन्हों में ज्ञान बहुत अच्छा है, योग कम है, तो बैटरी भर न सके; क्योंकि अपना देह का बहुत रहता है। योग कुछ भी है नहीं। इसलिए ज्ञान बाण में जौहर नहीं भरता। तलवार में भी जौहर भरता है। वही तलवार देखो 10 रुपये की, वही तलवार देखो 500 रुपये की भी होगी। गुरु गोविंद सिंह की तलवार का कितना गायन है। इसमें कोई हिंसा की बात नहीं। यह है योगबल की तलवार। वह जौहर चाहिए। हिंसा की बात नहीं। देवताएँ हैं डबल अहिंसक। वही फिर अभी डबल हिंसक बने हैं। आज डबल हिंसक, कल डबल अहिंसक। आज भारत ऐसा है, कल ऐसा बनेगा। आज रावण-राज्य, कल रामराज्य। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। कल हम रावणराज्य में थे तो नाक में दम था। आज हम परमपिता परमात्मा साथ रह(रहे) हैं। तुम ईश्वरीय परिवार के हो ना। सतयुग में तुमको ईश्वरीय परिवार नहीं कहेंगे। वहाँ होगा दैवी परिवार। यह है ईश्वरीय परिवार। बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। बाप का कितना प्यार मिलता है। आधा कल्प का रावण का प्यार मिलने से बन्दर बन जाते हैं। अभी बेहद के बाप का प्यार मिलने से तुम देवता बन जाते हो। 5000 वर्ष की बात है। उन्होंने लाखों वर्ष लगा दिया है। यह भी तुम्हारे जैसा पुजारी था। सभी से लास्ट नम्बर में झाड़ में खड़ा है। योगबल हो तो कोई को समझाने से तीर भी लगे। योगबल नहीं है तो किसकी बुद्धि ठका-2 नहीं होता है। योगबल अच्छा होगा तो जौहर भरेगा। यह भी बाप ने समझाया है भक्तिमार्ग के शास्त्रों से मेरी प्राप्ति नहीं हो सकती, और ही पूरी दुर्गति को पाते हैं। सतयुग में तुमको कितना अथाह सुख रहता है, कितना धन रहता है, जो फिर बाद में मंदिरों में भी इतना अथाह धन था, जिसको आकर लूटा। मंदिर तो और भी होंगे ना। प्रजा की भी तो मंदिर होंगे। प्रजा भी बहुत साहुकार होते हैं। प्रजा से राजा लोग कर्जा उठाते हैं। यह बहुत गंदी दुनिया है। सभी से गंदा मुल्क है कलकत्ता। जो भी साहुकार होंगे वह माइयों को अलग मकान बनाकर देते हैं। घर वाली को कुछ नहीं देते। इसलिए इसका नाम ही है वैश्यालय। इनको चेंज करने की तुम बच्चों को मेहनत करनी है। जो करेंगे वह पावेंगे। देह-अभिमान आया और गिरा। मन्मनाभव का अर्थ भी कोई समझते थोड़े ही हैं। संस्कृत में—

श्लोक सिर्फ कंठ कर लेते हैं। समझाने लिए उनमें ज्ञान तो हो न सके सिवाय तुम ब्राह्मणों के। कोई भी मठ-पंथ वाला देवता बन न सके। पहले प्रजापिता ब्रह्माकुमारियाँ और कुमार बनने बिगर देवता कैसे बनेंगे? जो कल्प पहले बने हैं, वही बनेंगे। टाइम लगता है। झाड़ बड़ा होगा तो फिर वृद्धि को प(ा)ता जावेगा। अभी झाड़ कितना पुराना हो गया है। फिर अब नया कलम लगता है। ब्राह्मण बन जावेंगे। चींटी मार्ग से वि(व)हंग मार्ग होगा। तो बाप समझाते हैं मीठे-2 बच्चों बाप को याद करते रहो और स्वदर्शनचक्र फिराते रहो। सभी को पुरुषार्थ कराना है। गाँवों की भी सर्विस करनी है। तुम्हारी बुद्धि में सारा 84 का चक्र है। तुम ब्राह्मण ही फिर देवता और क्षत्रिय घराणे के बनते हो। सूर्यवंशी-चंद्रवंशी अक्षर का भी अर्थ कोई समझते नहीं। मेहनत कर समझाया जाता है, फिर भी नहीं समझते तो समझा जावेगा अभी समय नहीं है। फिर भी आते तो हैं ना। समझते हैं ब्रह्माकुमारियों का बाहर में नाम ऐसा है। अन्दर देखते हैं यह तो बहुत अच्छा काम कर रही हैं। यह तो मनुष्यमात्र के कैरेक्टर्स सुधारने का रास्ता बताया जाता है। देवताओं के कैरेक्टर्स देखो कितने अच्छे हैं। सम्पूर्ण निर्विकारी हैं ना। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इन 5 भूतों के कारण ही तुम्हारा कैरेक्टर्स बिगड़ा हुआ है। जिस समय समझाते हो उस समय अच्छा सुनते हैं, फिर बाहर जाने से भूल जाते। तब कहा जाता है सौ-सौ करे श्रृंगार..... शुरू में बाबा बहुत समझाते थे। कहते थे यह तो बाबा गाली देते हैं। डॉग इज़(न) द मेन्जर कहते थे। अमृत न खुद पीते हैं, न दूसरों को पीने देते हैं। यह तो बाप की समझानी है। गाली की तो बात ही नहीं। समझाते हैं दैवी चलन रखो। कुत्ते मिसल भौंकते क्यों हो? स्वर्ग में क्रोध होता ही नहीं। बाप समझावेंगे तो सही ना। बाप कुछ भी सामने समझाते थे, कब किसको गुस्सा नहीं आता था। बाबा बहुत बैठ रिफाइननेस से समझाते थे। ड्रामा कायदे अनुसार चलता रहता है। ड्रामा में कोई भूल नहीं है। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है। जो भी एक्ट अभी चलती है फिर 5000 वर्ष बाद होगी। कई कहते हैं यह कैसे होंगे, पहाड़ टूट गई फिर आपे ही कैसे बनेंगे? अरे, तुम नाटक में देखो, महल खलास हो गया फिर वह नाटक रिपीट होगा तो बना हुआ देखेंगे ना। यह भी अनादि ड्रामा का बना बनाया खेल है, जो हूबहू रिपीट होता रहता है। इसको समझने में बड़ी ब्रेन चाहिए। कोई की बुद्धि (में) बैठना बड़ा मुश्किल होता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी है ना। रामराज्य में इन देवी-देवताओं का राज्य था। इन्हों की ही पूजा होती थी। बाप ने समझाया है तुम ही पूज्य और पुजारी बनते हो। हम सो का अर्थ भी बच्चों को समझाया है। हम सो देवता, हम सो क्षत्रिय..... बाजोली है। इन्हों को अच्छी रीत याद रखना है। समझाने की कोशिश करनी है। बाबा ऐसे नहीं कहते धंधा आदि छोड़ो। नहीं, सिर्फ सतोप्रधान बनना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी का राज़ समझकर समझाओ। मूल बात है मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो, तो सतोप्रधान बन जावेंगे। 5000 वर्ष का यह चक्र है जो फिरता रहता है। याद की यात्रा है नम्बरवन। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो, मैं सभी बच्चों को साथ ले जाऊँगा। सतयुग में कितने {थोड़े} मनुष्य होते हैं। कलियुग में कितने ढेर मनुष्य हैं। कौन इतने सभी को वापस ले गये? इतने सारे जंगल की सफाई किसने की? बागवान, खेवैया उस बाप को ही कहते हैं। वही दुख से छुड़ाकर उस पार ले जाते हैं। पढ़ाई कितनी मीठी लगती है। सबसे ऊँच पढ़ाई है। बाप समझाते हैं नॉलेज सोर्स ऑफ इनकम। तुमको कारून का खज़ाना मिलता है। भक्ति में तो कुछ भी नहीं मिलता है। यहाँ पाँव पड़ने आदि की बात नहीं। वह लोग तो गुरु के आगे जाकर सो जाते हैं। उस भक्ति दुर्गति से अब बाप छुड़ाते हैं। तो ऐसे बाप को याद करना चाहिए ना। बाप को राम-2 कह याद करेंगे क्या? बाबा है यह तो समझ लेते हैं। बाप का वर्सा ज़रूर मिलना है। वह खुशी रहती है। बाबा के पास लिखते हैं बाबा, हम साहुकार पास गये तो लज्जा आती थी, हम तो गरीब हैं। अरे, तुम देह-अभिमान में क्यों आते हो? गरीबी ही तुमको अच्छा बनाते हैं। साहुकार होते तो यहाँ होते भी नहीं। समझते हैं हम साहुकार होता तो हमारा सिर ऊँचा होता। अरे, सिर ऊँच वालों की सत्यानाश हो जाती है। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।